चित्रकला

भारतीय कला

भाग–2

कक्षा 12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

कक्षा 12 चित्रकला भारतीय कला भाग–2

चित्रकला

भारतीय कला

भाग–2

कक्षा–12

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर

भारतीय कला भाग–2

पाठ्य–पुस्तक निर्माण समिति

डॉ. मदन सिंह राठौड (संयोजक)

प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग,

मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय, उदयपुर

लेखक

डॉ. इन्द्र सिंह राजपुरोहित

विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग,

राजकीय डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

डॉ. किरण सरना

प्रोफेसर, दृश्यकला विभाग,

वनस्थली विश्वविद्यालय, टोंक

श्री महेन्द्र प्रताप शर्मा

व्याख्याता, चित्रकला,

राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,

नोहर, हनुमानगढ़

श्रीमती सविता सिंह गुरावा

व्याख्याता, चित्रकला,

राजकीय बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय,

आदर्श नगर, जयपुर

चित्रकला पाठ्यक्रम समिति

डॉ. मदनसिंह राठौड
(संयोजक)
कला–विभाग, यू.सी.एस.एस.एच.,
मोहनलाल सुखाडिया विश्वविद्यालय,
उदयपुर–313001

श्री अमित राजवंशी
राजकीय गर्ल्स महाविद्यालय,
अजमेर–305001

डॉ. बिरदी चंद गहलोत
वरिष्ठ व्याख्याता,
राजकीय उच्च अध्ययन शिक्षा संस्थान,
अजमेर–305001

श्री पंकज गहलोत
व्याख्याता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
सुमेरपुर, (पाली)–306401

श्री सुनील कुमार शर्मा
व्याख्याता, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
बून्दी–323001

श्री सुबोध जोशी
व्याख्याता,
राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय,
भिचोर, (चित्तौडगढ)–312001

प्रस्तावना

सृजन स्वयं में ही सौन्दर्य की मूल अवधारणा को समाहित किया होता है, जो कलाकार के सौन्दर्यबोध से उद्भासित हो कर कलाकृति के रूप में अभिव्यक्त होता है। भारतीय चिन्तन परम्परा में कला सदैव सत्यम और शिवम की अवधारणा लिए सौन्दर्य भाव से परिपूर्ण मानवीय मूल्यों की संवाहक रही है, जिसने प्राचीन काल से वर्तमान तक उन तमाम भौगोलिक, राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषमताओं के उपरान्त न केवल अपने मूल दार्शनिक चिन्तन को ही बचाए रखा अपितु नवाचारों को समाहित करते हुए निरन्तर विकास की ओर प्रवृत रही है। भारतीय कला परम्परा में चित्रण हो या मूर्तन, सभी में भारतीय मूल्यों को रेखांकित किया गया है, जिसमें सम्यक सौन्दर्यबोध व सामाजिक व नीतिपरक मूल्यों की अवधारणा परिलक्षित होती है। कालान्तर में आए परिवर्तनों और स्वतन्त्रता के पश्चात वैश्विक प्रभावों ने भारतीय कला और कलाकारों को एक नया दृष्टिबोध प्रदान किया, जिसके चलते आधुनिक युग में भारतीय कला को वैश्विक पटल पर एक विशेष पहचान प्राप्त हुई। कला एवं सांस्कृतिक धरोहर किसी भी राष्ट्र की सम्प्रभुता एवं सामाजिक एक्य की आधारभूत अवधारणा होती है जिसमें भावी पीढ़ी को संस्कारित करने एवं राष्ट्र निर्माण की शक्ति निहित रहती है। इस समृद्ध परम्परा, पोषण एवं सरंक्षण के आग्रह एवं रचनात्मक व्यक्तित्व के निर्माण की आवश्यकता के दृष्टिगत शिक्षा में कला के प्रति जागरूकता और कला शिक्षा की महत्ता के अनुरूप माध्यमिक शिक्षा बोर्ड द्वारा पाठ्यक्रम में आंशिक संशोधन कर विद्यालयी शिक्षा स्तर पर इसे चरणबद्ध रूप से लागू किया गया है।

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान द्वारा कक्षा 12 के चित्रकला पाठ्यक्रमानुसार सैद्धांतिक प्रश्न पत्र हेतु पाठ्य पुस्तक, ''भारतीय कला, भाग–2'' को तीन इकाइयों में विभक्त कर अध्ययन सुलभ बनाते हुए विभिन्न कला खण्डों में भारतीय कला इतिहास के क्रमिक विकास को प्रस्तुत कर खण्ड – 'अ' में मध्यकालीन लघु चित्र शैलियों के उद्भव विकास और कलागत विषयवस्तु को अध्ययन की दृष्टि से शामिल किया गया है, वहीं खण्ड– 'ब' में स्वतन्त्रता आन्दोलन और स्वतन्त्रता पश्चात के कला रूपों को आधुनिक भारतीय चित्रकला की अध्ययन वस्तु बनाया है। चूंकि पुस्तक का प्रस्तुतीकरण काल क्रमानुसार है, अतः खण्ड – 'स' में मध्यकालीन मूर्तन एवं मंदिर स्थापत्य के विषय संदर्भ में भारतीय एवं राजस्थानी मूर्तिशिल्पों के साथ–साथ आधुनिक मूर्तिकला का विश्लेषणात्मक अध्ययन भी प्रस्तुत किया गया है। पुस्तक में यथास्थान चित्र, मानचित्र व रेखाचित्र आदि का समावेश अध्ययन के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायक सिद्ध होगा।

छात्रों को विषय के सैद्धान्तिक अध्ययन के साथ प्रायोगिक कार्य में भी सहयोग प्राप्त हो, इस हेतु पुस्तक के अंतिम अध्याय में प्रायोगिक पक्ष की अध्ययन प्रणाली की चर्चा की गई है। चूंकि प्रायोगिक कार्य पाठ्यक्रमानुसार अध्यापक के दिशा निर्देश में सम्पन्न होता है फिर भी छात्रों को सहयोग की दृष्टि से वस्तु चित्रण प्रविधि, रंगांकन तकनीक एवं संयोजन हेतु आवश्यक निर्देशों के साथ–साथ तकनीकी शब्दावली एवं विशेष परिभाषाओं का समावेश किया गया है।

पुस्तक लेखन में सभी लेखकों ने अपने अनुभव व ज्ञान से मौलिक एवं प्रभावी लेखन प्रस्तुत किया है, इस हेतु मैं उनको हृदय से कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

प्रस्तुत पुस्तक की भाषा यथासम्भव वैज्ञानिक, तार्किक एवं बोधगम्य रखने का प्रयास किया गया है और पुस्तक लेखन और सम्पादन में पूर्ण सावधानी बरती गई है, फिर भी मानवीय त्रुटि सम्भव है। सुधार और सुझाव हेतु सुधिजनों के विचारों का सदैव स्वागत है, जो निश्चित ही आगामी प्रकाशन में समाहित कर परिष्कृत प्रकाशन में सहायक होंगे।

डॉ. मदन सिंह राठौड़
संयोजक

अनुक्रमणिका

अध्याय	विवरण	पृष्ठ संख्या
	(खण्ड – अ) **इकाई – 1** **मध्यकालीन भारतीय चित्रकला**	
1	दक्खिनी चित्र शैली	01–03
2	मुगल चित्र शैली	04–12
3	राजस्थानी लघुचित्र शैलियां	13–30
4	पहाड़ी चित्रकला	31–41
	इकाई – 2 **आधुनिक भारतीय चित्रकला**	
5	कम्पनी शैली एवं राजा रवि वर्मा	42–46
6	भारतीय पुनरूत्थानकालीन कला	47–55
7	आधुनिक कला और कलाकार	56–61
8	राजस्थान की आधुनिक कला	62–74
	इकाई – 3 **भारतीय मूर्तिकला और मंदिर स्थापत्य**	
9	मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला और स्थापत्य	75–83
10	राजस्थान की मूर्तिकला व मंदिर स्थापत्य	84–94
11	आधुनिक भारतीय मूर्तिकला	95–106
12	राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला	107–111
	(खण्ड – ब) **चित्रकला प्रायोगिक**	
	प्रायोगिक कार्य	112–116
	परिशिष्ट	117–125
	शब्दावली	126–130

कक्षा–12
भारतीय कला–भाग–2
विषय–चित्रकला

समय : 3:15 घण्टे | पूर्णांकः 24

क्र.स.	अधिगम क्षेत्र	अंकभार
1.	मध्यकालीन भारतीय चित्रकला	8.5
2.	आधुनिक भारतीय चित्रकला	8.5
3.	मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला एवं मन्दिर स्थापत्य	7

क्र.स.	पाठ्यवस्तु	कालांश	अंकभार
	इकाई–1 मध्यकालीन भारतीय चित्रकला		
1.	दक्खिनी चित्र शैली (i) ऐतिहासिक पृष्ठभूमि (ii) दक्खिनी शैली की कलागत विशेषताएँ (अहमदनगर, बीजापुर, गोलकुण्डा) (iii) दक्खिनी चित्र शैली के प्रतिनिधि चित्रों का अध्ययन	3	1
2.	मुगल चित्र शैली (i) उद्भव व विकास (ii) मुगल शैली की कलागत विशेषताएँ (iii) मुगलशैली के प्रतिनिधि चित्रों का अध्ययन	7	2.5
3.	राजस्थानी चित्र शैली (i) उद्भव व विकास (ii) राजस्थान की उपशैलियों का कलागत अध्ययन उपशैलियाँ– मेवाड़–उदयपुर–नाथद्वारा, मारवाड़–जोधपुर–बीकानेर, किशनगढ़ हाड़ौती–कोटा–बून्दी ढूढ़ाड़–जयपुर, अलवर, उनियारा (iii) राजस्थानी चित्र शैली के प्रतिनिधि चित्रों का कलागत अध्ययन	8	3
4.	पहाड़ी चित्र शैली (i) उद्भव व विकास (ii) उपशैलियाँ (कांगड़ा–बसोहली) (iii) पहाड़ी शैली के प्रतिनिधी चित्रों का कलागत अध्ययन	6	2

	इकाई–2 आधुनिक भारतीय चित्रकला	4	1.5
5.	कम्पनी शैली एवं राजा रवि वर्मा (i) कम्पनी शैली–उद्भव, विकास एवं कलागत विशेषताएँ (ii) राजा रवि वर्मा का व्यक्तित्व एवं कृतित्व (iii) कम्पनी शैली और राजा रवि वर्मा के प्रतिनिधि चित्रों का अध्ययन		
6.	भारतीय पुनरूत्थानकालीन कला (i) बंगाल शैली उद्भव व विकास (ii) बंगाल शैली की कलागत विशेषताएँ (iii) बंगाल शैली के कला विचारक एवं प्रतिनिधि चित्रकार और उनके चित्रों का अध्ययन। आनन्द कैटिश कुमारस्वामी, ई.बी.हेवेल, रवीन्द्रनाथ टैगोर, अवनीन्द्रनाथ टैगोर, नन्दलाल बसु, अब्दुर्रहमान चुगतई, असित कुमार हाल्दार, यामिनी रॉय, व अमृता शेरगिल।	8	3
7.	आधुनिक कला और कलाकार (i) प्रमुख कला समूह (कलकत्ता कला समूह, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप,शिल्पीचक्र) (ii) प्रतिनिधी चित्रकार एवं उनके चित्रों का कलागत अध्ययन। के.के. हेब्बर, एन.एस.बेन्द्रे, बी.सी.सान्याल, जे स्वामीनाथन, के.जी.सुब्रमण्यम, ए.रामचन्द्रन	6	2
8.	राजस्थान की आधुनिक कला (i) भूरसिंह शेखावत, रामगोपाल विजयवर्गीय, कृपालसिंह शेखावत, रत्नाकर विनायक साखलकर, बी.सी.गुई, देवकीनन्दन शर्मा, गोवर्धन लाल जोशी, पी.एन. चोयल, द्वारका प्रसाद शर्मा, राम जैसवाल व सुरेश शर्मा। (ii) राजस्थान की समकालीन कला का परिचय	6	2
	इकाई–3		
9.	मध्यकालीन भारतीय मूर्तिकला एवं मन्दिर स्थापत्य (i) एलोरा, एलिफेन्टा, महाबलीपुरम, कोणार्क, खजुराहो आदि मन्दिरों के मूर्ति शिल्प और चोलकालीन नटराज व अन्य धातु मूर्तिशिल्पों का कलागत अध्ययन।	6	2

10.	राजस्थान की मूर्तिकला व मन्दिर स्थापत्य (i) देलवाड़ा, रणकपुर, किराड़ू, ओसियां, आभानेरी, जगत मन्दिर (उदयपुर), बाड़ोली (कोटा) आदि मन्दिरों के मूर्तिशिल्पों का कलागत अध्ययन।	4	1.5
11.	आधुनिक भारतीय मूर्तिकला (i) रामकिंकर बैज, देवीप्रसाद राय चौधरी, शंखो चौधरी, धनराज भगत, सतीश गुजराल, हिम्मत शाह एवं मृणालिनी मुखर्जी।	6	2
12.	राजस्थान की आधुनिक मूर्तिकला (i) उषा रानी हुजा, गोपी चन्द्र मिश्रा एवं अर्जुन प्रजापति (ii) राजस्थान की समकालीन मूर्तिकला का परिचय।	4	1.5

कक्षा–12

चित्रकला (प्रायोगिक)

प्रायोगिक खण्ड	अंक
खण्ड–अः प्राकृतिक (फल, फूल, सब्जी, इत्यादि) तथा वस्तु चित्रण (वृत्ताकार, घनाकार व बेलनाकार) का अध्ययन	25
खण्ड–बः चित्र संयोजन	25
• सत्रीय कार्य	20
कुल अंक	70

खण्ड अः प्राकृतिक तथा वस्तु चित्रण अध्ययन

कक्षा 11 में किए गए अभ्यासों के आधार पर तथा साथ में परदे की पृष्ठभूमि में दो या तीन वस्तुओं का एक निश्चित बिन्दु से पेंसिल माध्यम में प्रकाश व छाया सहित तथा रंगीन चित्रण

खण्ड बः चित्र संयोजन

दैनिक जीवन और प्रकृति के विषयों पर आधारित काल्पनिक चित्रों का जल–रंगो अथवा पोस्टर–रंगो में वर्ण–मान सहित सृजन।

• सत्रीय कार्य

एक फाइल प्रस्तुत करना, जिसमें निम्नलिखित रचनाएँ शामिल हों–

(क) सत्र के दौरान किसी भी माध्यम में सृजित प्रकृति तथा वस्तु–चित्रण (स्टिल लाइफ) अध्ययन के पाँच चयनित अभ्यास चित्रों में कम से कम दो वस्तु चित्रण के अभ्यास चित्र हों।

(ख) दैनिक जीवन और प्रकृति पर आधारित पाँच चयनित चित्र संयोजन (कम्पोजिशन)।

परीक्षार्थी द्वारा अध्ययन के दौरान निर्मित कृतियों को विषयाध्यापक से प्रमाणित करवाकर विद्यालय के प्राधिकारियों द्वारा यह प्रमाणित कराके मूल्यांकन के लिए परीक्षकों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाए।

टिप्पणी : समय–सारिणी इस प्रकार बनाई जाए कि विद्यार्थियों को एक बार में कम से कम दो कालांश तक एक साथ निरंतर कार्य करने का अवसर मिले।

प्रायोगिक परीक्षा के मूल्यांकन के लिए दिशा निर्देश

1. अंक योजना :

खण्ड–अ : प्रकृति तथा वस्तु चित्रण (स्टिल लाइफ)

(i) अंकन एवं संयोजन पक्ष	10
(ii) माध्यम/रंगों का प्रयोग	10
(iii) समग्र प्रभाव	5
	कुल 25 अंक

खण्ड–ब : चित्र संयोजन (कम्पोजिशन)

(i) संयोजन–व्यवस्था, विषय पर बल सहित	10
(ii) माध्यम (रंगों) का प्रयोग	10
(iii) मौलिकता और समग्र प्रभाव	5
	कुल 25 अंक

सत्रीय कार्य 10 X 2 = 20

(i) किसी भी माध्यम में प्रकृति तथा वस्तु–अध्ययन के पाँच चयन किये हुए अभ्यास चित्र जिनमें कम से कम दो वस्तु चित्र (स्टिल लाइफ) हो।

(ii) दैनिक जीवन और प्रकृति पर आधारित तैयार किये गये पाँच चयनित चित्र संयोजन

टिप्पणी : सत्रीय कार्य का मूल्यांकन भी इसी आधार पर किया जाएगा

2. प्रश्नों का प्रारूप

खण्ड–अ : प्रकृति तथा वस्तु–चित्रण :

अपने सामने एक ड्राइंग बोर्ड पर व्यवस्थित वस्तु–समूह का रेखांकन और चित्रण एक स्थिर बिन्दु (जो आपको दिया गया है) से 1/4–इम्पीरियल (15''X11'') आकार वाले एक ड्राइंग–कागज पर पेंसिल अथवा रंगों में चित्रण कीजिए। आपका चित्र कागज के अनुपातनुसार होना चाहिए। वस्तुओं को प्रकाश–छाया तथा प्रतिच्छाया, परछाई, सहित यथार्थवादी ढंग से चित्रित किया जाना चाहिए। इस अध्ययन में ड्राइंग बोर्ड को शामिल नहीं करना है।

टिप्पणी : परीक्षा हेतु वस्तुओं के समूह का चयन बाह्य और आंतरिक परीक्षकों द्वारा संयुक्त रूप से निर्देशानुसार परामर्श करके करना है। प्रकृति तथा वस्तु–चित्रण की वस्तुओं को परीक्षार्थियों के सम्मुख व्यवस्थित किया जाए।

खण्ड–ब : चित्र संयोजन :

1/4 इम्पीरियल आकार वाले ड्राइंग–कागज पर क्षैतिज अथवा ऊर्ध्वाधर दिशा में अपनी पसंद के किसी माध्यम (जल/पेस्टल/टेम्परा एक्रैलिक रंगों) में निम्नलिखित पांच विषयों में से किसी एक पर चित्र संयोजन कीजिए। आपका संयोजन मौलिक तथा प्रभावकारी होना चाहिए। सुव्यवस्थित रेखांकन, माध्यम (रंग आदि) के प्रभावोत्पादक प्रयोग, विषय वस्तु पर यथोचित बल तथा सम्पूर्ण स्थान के सदुपयोग करने को अधिक अंक दिये जाएंगे।

टिप्पणी : चित्र संयोजन के लिए किन्हीं पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण बाह्य तथा आंतरिक परीक्षक निर्देशानुसार संयुक्त रूप से करेंगे और भाग खण्ड–ब की परीक्षा के आरंभ होने से ठीक पहले यहां उनका उल्लेख करेंगे।

3. (अ) प्रकृति तथा वस्तु चित्रण के लिए वस्तुओं का चयन करने के बारे में अनुदेश

1. परीक्षक ऐसी दो या तीन उपयुक्त वस्तुओं का इस ढंग से चयन/निर्धारण करें कि वस्तुओं के इस समूह में प्राकृतिक तथा ज्यामितीय रूपाकार शामिल हो।

(i) प्राकृतिक रूप–बड़े आकार के बेलबूटे तथा फूल, फल एवं वनस्पतियाँ आदि।

(ii) लकड़ी/प्लास्टिक/कागज/धातु/मिट्टी आदि से बने ज्यामितीय रूप, जैसे घन, शंकु, समपार्श्व, बेलनाकार और वर्तुलाकार वस्तुएं।

(ii) अज्यामितीय रूप, जैसे–घरेलू बर्तन एवं दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुएं आदि।

2. सामान्यतः बड़े (उपयुक्त) आकार की वस्तुओं का चयन किया जाना चाहिए।

3. परीक्षा केन्द्र के स्थल तथा ऋतु के अनुसार प्रकृति से संबंधित एक फल इत्यादि अवश्य शामिल किया जाएं। प्राकृतिक वस्तुओं की खरीद/व्यवस्था परीक्षा वाले दिन ही की जाए ताकि उनकी ताजगी बरकरार रहे।

4. चयन की गई वस्तुओं के रंगों तथा उनकी (टोन) तान के अनुरूप पृष्ठभूमि तथा अग्रभूमि के लिए अलग–अलग रंगों के दो कपड़ों को (एक गहरी रंगत में और दूसरा हल्की रंगत में) भी शामिल किया जाए।

(c) चित्र संयोजन के विषय–निर्धारण के लिए अनुदेश

1. परीक्षकों को चित्र–संयोजन के लिए पांच उपयुक्त विषयों का चयन/निर्धारण करना है।

2. प्रत्येक विषय इस प्रकार बनाया जाये कि परीक्षार्थियों को विषय का स्पष्ट बोध हो जाए और वे उनके निर्माण में अपनी कल्पना शक्ति का खुलकर प्रयोग कर सकें।
3. विषयों का चयन करने के लिए परीक्षक स्वतंत्र हैं परन्तु ये विषय कक्षा बारहवीं के स्तर और विद्यालय / परीक्षार्थियों के वातावरण के अनुसार होने चाहिए।

चित्र–संयोजन के विषयों के कुछ पहचान क्षेत्रों का उल्लेख नीचे किया गया है इनमें आवश्यकतानुसार कुछ अन्य क्षेत्रों का समावेश भी किया जा सकता है :

(I) परिवार, मित्रों तथा दैनिक जीवन के कार्यकलाप
(ii) पारिवारिक, व्यावसायियों के कार्यकलाप
(iii) खेल–कूद के कार्यकलाप
(iv) प्रकृति
(v) काल्पनिकता
(vi) राष्ट्रीय, धार्मिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक तथा सामाजिक घटनाएं उत्सव एवं समारोह

टिप्पणी – समीपस्थ दृश्यजगत से किये गये रेखांकनों को चित्रों में रूपान्तरित करने के कौशल को विकसित किया जाये तथा कल्पना के आधार पर आकारों को नवीन अन्तराल व्यवस्था में पुनः सृजित करने का अभ्यास करवाया जाये, जैसे– गाते–नाचते, उत्सव मनाते हुए, पूजा करते हुए, कुएँ से पानी लाते हुए लोग। ऐसे विषयों को चित्रित करवाया जाये जिनसे विद्यार्थी का सीधा संबंध हो ; जैसे– ग्रामीण परिवेश, उत्सव, मेला श्रम इत्यादि। तीन मानवाकृतियाँ आवश्यक रूप से हो।

4. सामान्य अनुदेश :

1. वस्तु समूह को 2X2 फीट के मॉडल स्टेण्ड पर रखा जाये। मॉडल स्टैण्ड न होने की स्थिति में स्टूल / ड्रॉइंग बोर्ड पर रखा जावे। पृष्ठभूमि में उपयुक्त रंग का कपड़ा अथवा कागज लगाया जावे। वस्तु समूह दृष्टि से ऊपर न हो। मॉडल स्टैण्ड अथवा स्टूल की ऊँचाई 50 सेमी. से अधिक न हो।
2. प्रायोगिक कार्य हेतु ड्रॉइंग शीट के साथ एक सादा कागज परीक्षार्थियों को दिया जायेगा।
3. खण्ड–'अ' व खण्ड 'ब' की प्रायोगिक परीक्षा एक ही दिन में 6 घटें में सम्पन्न करवाई जाए। व्यावहारिकता की दृष्टि से दोनों के मध्य 30 मिनिट का अन्तराल दिया जाए।
4. छात्रों को कला मेलों, चित्र प्रदर्शनियों (राज्य स्तरीय) का अवलोकन करवाया जावे एवं सत्र में एक बार मण्डल स्तर पर छात्र–छात्राओं के चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित करवायी जाए।

अध्यापकों के लिए प्रस्तावित संदर्भ पुस्तकें (प्रायोगिक खण्ड हेतु) :

1. 'पेन्ट स्टिल लाइफ', क्लोरेड्डा व्हाइट, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
2. 'आर्ट ऑफ ड्राइंग' ग्रुम्बाचेर लायब्रेरी बुक (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
3. 'ऑन टेक्नीक्स', लिओन फ्रैंक, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
4. 'मोर ट्रीज', फ्रेड्रिक गार्डनर, (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
5. 'हाउ टु ड्रा एण्ड पेंट टैक्सचर्ज आपफ ऐनिमल्ज', वाल्टर जे विल्वेडिंग (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
6. 'हाउ टु ड्रा एण्ड पेंट ऐनिमल्ज', एक्सप्रेशन वाल्टर जे विल्वेडिंग (वाल्टर टी. फॉस्टर प्रकाशन)।
7. 'आर्ट ऑफ दि पेन्सिल', बोरो जॉनसन, (सर आइजक पिटमैन एण्ड संज लि. नई दिल्ली)।
8. 'डिजाइन फॉर यू', एथेल जैन बीटलेर, (जॉन विलारी एण्ड सन्ज लि. नई दिल्ली)
9. 'कम्पलीट बुक ऑपफ आर्टिस्ट्स टेक्नीक्स', डॉ. कुर्ट हर्बर्ज (थॉमसन एण्ड हड्सन, लंदन)।

निर्धारित पुस्तक–

भारतीय कला–भाग–2 – माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राजस्थान, अजमेर द्वारा प्रकाशित